International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

भारतीय ज्ञान परम्परा एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीतिः 2020

सुनील कुमार पाठक[1], डॉ. अर्चना सेंन[2]

[1]शोधार्थी, शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, निवाड़ी (शोधकेन्द्र)

[2]शोधनिर्देशक, शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, निवाड़ी (शोधकेन्द्र)

1— सारांशिका—

भारतीय संस्कृति एवं संस्कृत का मूल आधार ही भारतीय ज्ञान परम्परा है। भारतीय ज्ञान परम्परा भारत वर्ष में प्राचीन काल से चली रही शिक्षा प्रणाली है। इसके अर्न्तगत वेद,वेदांग, उपनिषद, श्रुति, स्मृति से लेकर विभिन्न प्रकार के दर्शनशास्त्र, धर्मशास्त्र, अर्थशास्त्र, शिक्षा शास्त्र, नाट्यशास्त्र, प्रबन्धन एवं विज्ञान, विद्याशाखा इत्यादि के अथाह ज्ञान भण्डार है। भारतीय ज्ञान परम्परा के अंतर्गत शिक्षा को विद्या, ज्ञान, दर्शन, प्रबोध, प्रज्ञा, बागीश एवं भारती इत्यादि शब्दो से परिभाषित कया गया है। भारतीय ज्ञान प्रणाली के स्वर्णिम इतिहास का अध्ययन करने पर यह ज्ञात होता है कि प्राचीन समय में इस परम्परा का अभीष्ट उद्देश्य ज्ञान की प्राप्ति करने हुए विद्यार्थी के व्यक्तिव का सर्वागीण विकास करना तथा उसे समाजोपयोगी एवं मोक्षगामी बनाना था। भारतीय ज्ञान परम्परा प्रज्ञा का प्रतीक है जिसमें ज्ञान एवं विज्ञान, लौकिक एवं पर—लौकिक, कर्म एवं धर्म तथा भोग का अद्भुत समन्वय रहा है। इस प्रकार प्राचीन समय से ही शिक्षा के प्रति भारतीय ज्ञान परम्परा का दृष्टिकोण अत्यन्त व्यापक एवं सूक्ष्म रहा है।

2— संकेताक्षर—

सनातन ज्ञान, ज्ञान परम्परा, शिक्षा प्रणाली, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020

3— प्रस्तावना—

संस्कृत, संस्कृति एवं भारतीयता केवल मात्र शब्द नही अपितु भारत वर्ष की प्राचीन शिक्षा परम्परा की आत्मीयता के भाव है। 'शिक्षा' व्यक्ति के सर्वागीणं विकास, राष्ट्रीय प्रगति, सभ्यता एवं संस्कृति के उत्थान हेतु अनिवार्य है। भारतवर्ष के महान गुरूजनों ने शिक्षा के इस गहन महत्व को समझ लिया था। इसी के फलस्वरूप भारत के वैदिक काल में शिक्षा प्रणाली की सुंदर व्यवस्था की गयी थी, जिसका मुख्य आधार गुरूकुल शिक्षा प्रणाली थी। प्राचीन भारतीय गुरूकुल शिक्षा प्रणाली को विश्व की प्रथम सनातन धर्मा की शिक्षा प्रणाली के रूप में जाना जाता है। यह एंक प्रकार से आवासीय विद्याालय शिक्षा प्रणाली के समान ही थी, जिसकी उत्पत्ति भारतीय उप महाद्वीप में ईसा से लगभग 5000 वर्ष पूर्व की मानी जाती है। इन आश्रमों मं अनादि काल से अनेको विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करते रहे और यह व्यवस्था भारतवर्ष में 'गुरू—शिष्य परम्परा' के रूप में एक लम्बे समय तक चली। भारत वर्ष की इस महान शिक्षा परम्परा ने व्यक्ति के सर्वागीण विकास पर ध्यान केन्दित किया तथा सत्यनिष्ठा, विनम्रता, आत्मनिर्भरता, अनुशासन एवं परस्पर प्रेम व सम्मान जैसे मूल्यों पर बल दिया। भारत की प्राचीन शिक्षा प्रणाली ने विशाल वैदिक साहित्य को सुरक्षित रखा तथा ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रो में मौलिक विचारकों एवं विद्वानों को जन्म दिया, जिनसे भारतवर्ष का मस्तक आज भी यश व गौरव से उन्नत है।

4– वर्तमान शिक्षा व्यवस्था मे भारतीय ज्ञान परम्परा की अनिवार्यता की आवश्यकता–

प्राचीन गौरवमयी भारतीय ज्ञान परम्परा सम्पूर्ण विश्व को आलोकित करने वाली है। प्राचीन भारतीय कला के साक्ष्य चारों वेदो, वेदांग, उपनिषद, श्रुति, स्मृति से लेकर रामायण एवं श्रीमदभगवद् गीता में विद्यमान है। भारतीय ज्ञान परम्परा जो वैदिक एवं उपनिषद काल मे थी, वह बौद्ध एवं जैन काल में भी रही। इसके अंतर्गत महान गुरू–शिष्य परम्परा के माध्यम से अनेकों वर्षो तक अर्जित ज्ञान को आत्मसात व विश्लेषित कर नए ज्ञान को संश्लेषित किया गया। प्राचीन काल की ज्ञान प्रणाली, परम्पराएँ एवं प्रथाएँ मानवता को प्रोत्साहित करती थी। आधुनिक युग में प्रचलित भारतीय ज्ञान एवं विदेशो से आ रही तथा–कथित नवीन खोज हो हमारे ग्रंथो में पूर्व से ही उल्लेखित है, वह सब भारतीय ज्ञान परम्परा से समृद्धशाली होने प्रमाण है। इस प्रकार भारतीय ज्ञान प्रणाली वर्तमान परिदृश्य में और भी अधिक प्रांसगिक है, जो व्यक्ति को कर्तव्य–बोध, कर्तव्यपरायणता, स्थिरता एवं तनाव प्रबंधन इत्यादि के समायोजन हेतु व्यावहारिक मार्गदर्शन प्रदान करने के साथ–साथ विविध ज्ञान–विज्ञान, लौकिक एवं पारलौकिक रहस्यों को समझने के लिए परिशुद्ध अनुदेशन का कार्य करती है। इसमें निहित वेद एवं उपनिषद, दर्शन एवं प्रबंधन, ज्ञान एवं विज्ञान, धर्म एवं कर्म तथा योग एवं अर्थ से सम्बन्धित विशाल ज्ञान भण्डार का अनुप्रयोग विश्व कल्याण एवं मानवता के उद्धार हेतु किया जा सकता है।

5– साहित्यक समीक्षा –

भारतवर्ष की ज्ञान परम्परा वर्तमान समय में विमर्श के केन्द्र में है, क्योकि केन्द्र सरकार की नयी शिक्षा नीति 2020 ने भारत के सांस्कृतिक मूलाधरों को ठीक से जानने व समझने पर बल दिया है। इसके अंतर्गत पारम्परिक ज्ञान, कला, कौशल एवं मूल्यों को शिक्षा से जोडने एवं उसके नवीन प्रयोगो के लिए संस्तुति दी गई है। चूंकि भारत में समग्र एवं बहु विषयक माध्यम से ज्ञान अर्जन की प्राचीन परम्परा रही है। अतः प्राचीन एवं सनातन एवं विज्ञान की समृद्ध परम्परा के अनुशीलन में यह शिक्षा नीति शिक्षक प्रशिक्षण, समग्र एवं बहु अनुशासनात्मक शिक्षा एवं नैतिक मूल्यों पर आधारित शिक्षा पर ध्यान केंद्रित करती है। इसके कार्यान्वयन हेतु वर्तमान समय में भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय द्वारा भारतीय ज्ञान परम्परा प्रकोष्ठ का निर्माण किया गया है, जिसका लक्ष्य स्वदेशी ज्ञान एवं विद्या परम्परा को प्रोत्साहित करना एवं आगे बढाना है। इस दिशा में वर्ष 2020 में क्रियान्वित की गयी नयी राष्ट्रीय शिक्षा नीति में इस बात पर बल दिया गया है कि भारतीय ज्ञान परम्परा के विविध संप्रत्ययों को शिक्षा के विभिन्न स्तरों के पाठ्यक्रम स्तरों के पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाए। इसके लिए वर्ष 2022–2023 के बजट में भारतीय ज्ञान परम्परा के अध्ययन, संबर्धन एवं अन्वेक्षण के लिए निर्धरित राशि बढाकर 20 करोड रू कर दी गई थी।

6– निष्कर्ष–

प्रस्तुत शोध विश्लेषण से यह ज्ञात होता है कि वर्तमान भारतीय शिक्षा प्रणाली के विकास के परिपेक्ष्य में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की भूमिका उल्लेखनीय है। यह विद्यालयी शिक्षा एवं उच्च शिक्षा में विद्यार्थियों के बहुआयामी विकास हेतु आवश्यक सुधार प्रदान करती है। इसका मुख्य उद्देश्य प्रारंभिक बाल्यावस्था से ही विद्यार्थी को देखभाल करना, शिक्षा संरचना में और अधिक सुधार करना, शिक्षण प्रशिक्षण को और अधिक प्रभावशाली बनाते हुए परीक्षा प्रणाली में सुधार करना एवं प्राचीन भारतीय ज्ञान प्रणाली में निहित ज्ञान को नवीन पाठयचर्चा में लाना है। इसके लिए यह शिक्षा के 5+3+3+4 प्रारूप को अपनाते हुये विद्यार्थियों के शारीरिक, मानसिक, समाजिक, सांस्कृतिक, चरित्र निर्माण एवं नैतिक मूल्यों के विकास को महत्वपूर्ण मानती है। इसके अन्तर्गत भारतीय ज्ञान परम्परा पर आधारित ज्ञान–विज्ञान एवं दर्शन के समन्वय पर बल दिया गया है। यदि इस शिक्षा नीति का क्रियान्वयन सफल व सुनियोजित रूप से होता है तो यह शिक्षा नीति निश्चित रूप से भारत को वैश्विक में एक नए आयाम में ले आएगी।

संदर्भ ग्रंथ की सूची–

1. झा कन्हैया(2022), ''शिक्षा प्रणाली में भारतीय ज्ञान परम्परा की अनिवार्यता'' दैनिक जागरण संपादकीय आलेख, राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान, नोएडा(उ.प्र.)
2. भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020
3. शर्मा संगीता एवं पाण्डेय जय शंकर (2023), ''उच्च शिक्षा के संदर्भ में राष्ट्रीय शिक्षा नीति की विशेषताएँ एवं भारतीय ज्ञान परम्परा के अनुशीलन में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की भूमिका '' ह्यूमैनिटीय एंड डेवलपमेंट, वॉल्यमू 18 नंबर–01 जनवरी जून 2023
4. त्रिवेदी राकेश(2014), '' भारतीय शिक्षा का इतिहास'' ओमेगा पब्लिकेशन (दरियागंज) नई दिल्ली।
5. शोध पत्रिका पृष्ठ क्रमांक 6 से
6. राष्ट्रीय शिक्षा नीति पत्रिका पृष्ठ क्रमांक 4 से